पामर-किसान का गाड़ी का सफर

लेखक और चित्रकार: विलयम स्टिग

अनुवादक: अशोक गुप्ता

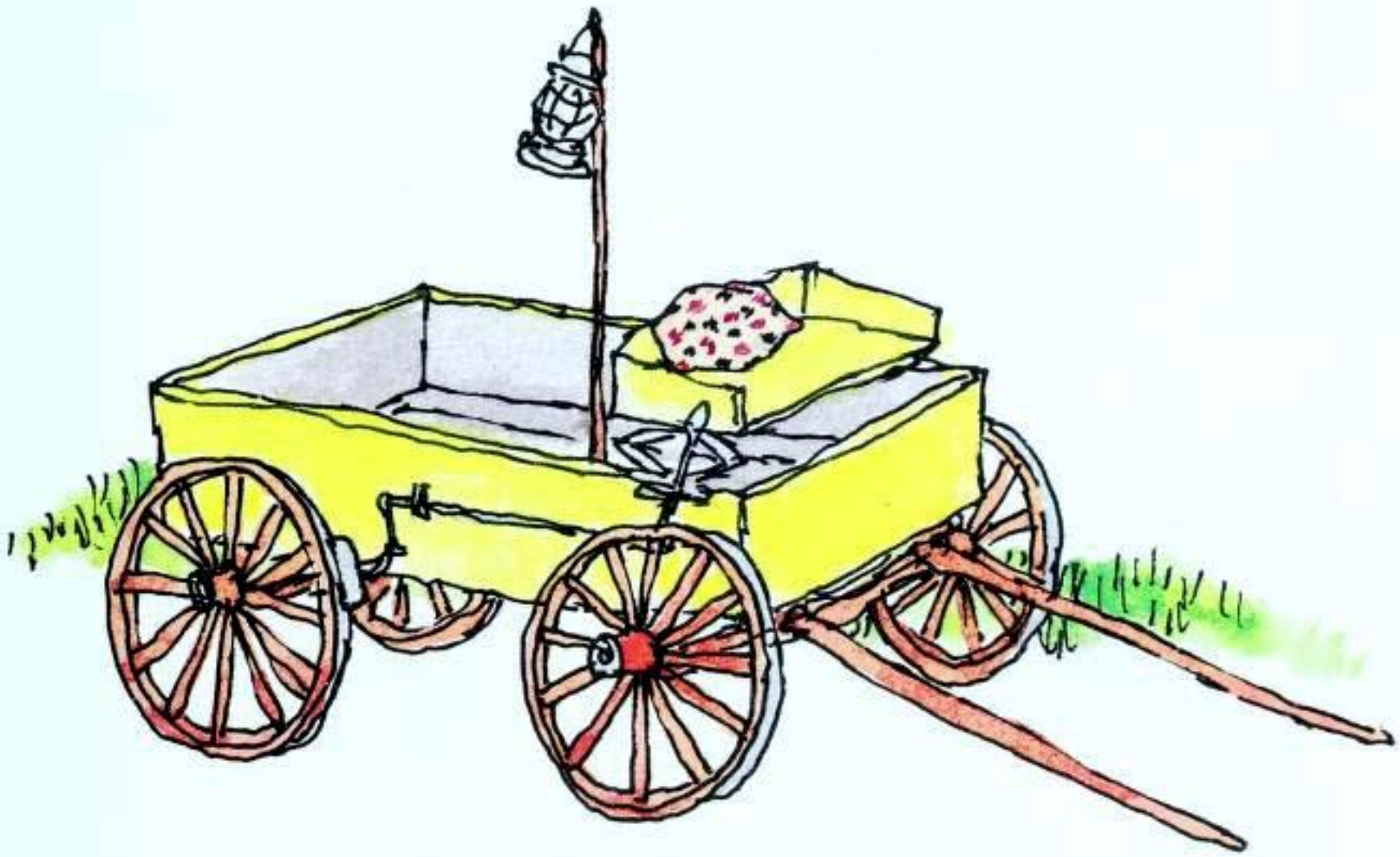

पामर-किसान का गाड़ी का सफर

लेखक और चित्रकार: विलयम स्टिग

अनुवादक: अशोक गुप्ता

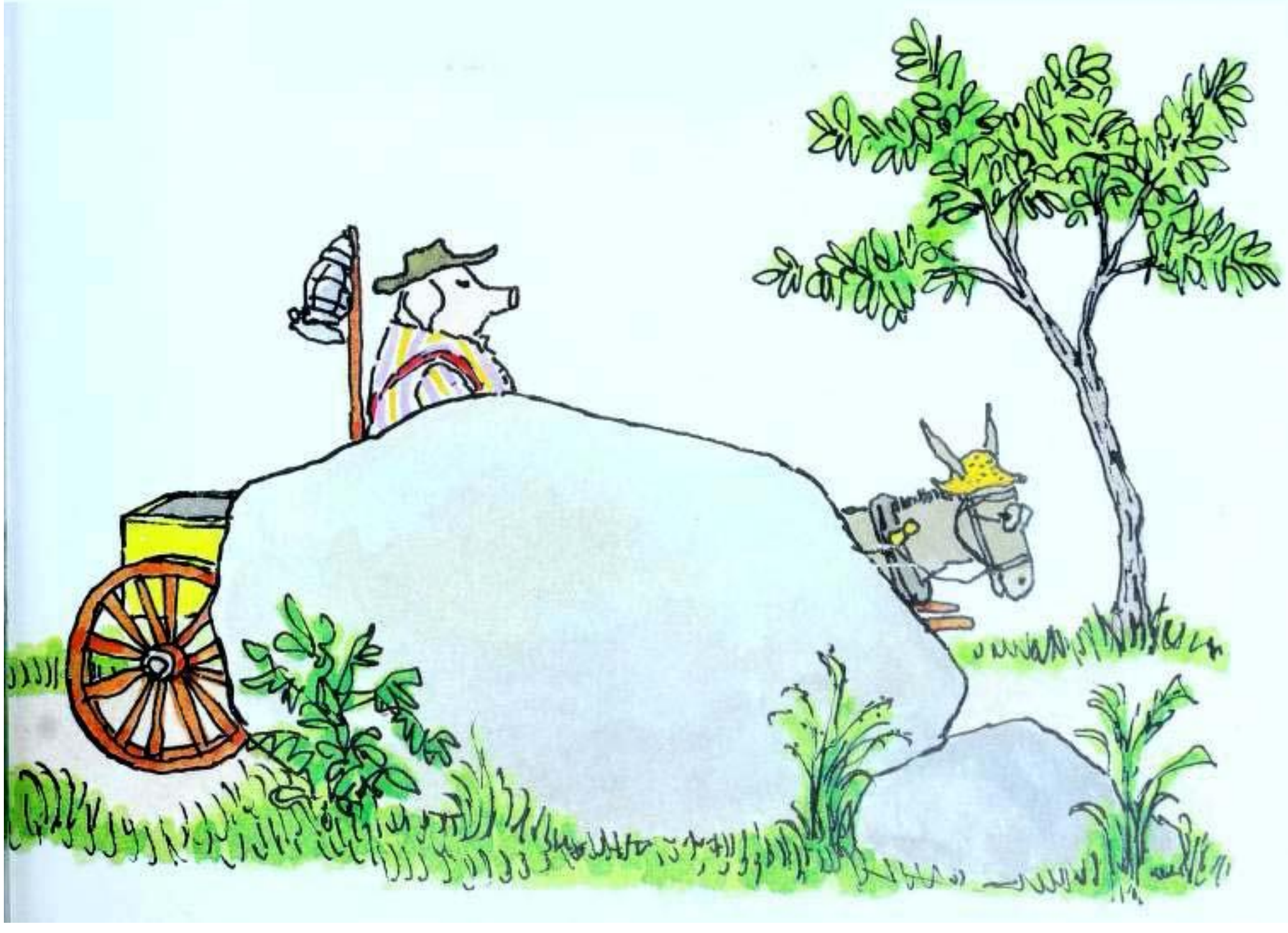

सूर्य निकलने से एक घंटा पहले, पामर-किसान दबे पाँव घर से बाहर निकला और खलिहान में अपने साथी, एबेनेज़र, को जगाने पहुँचा.

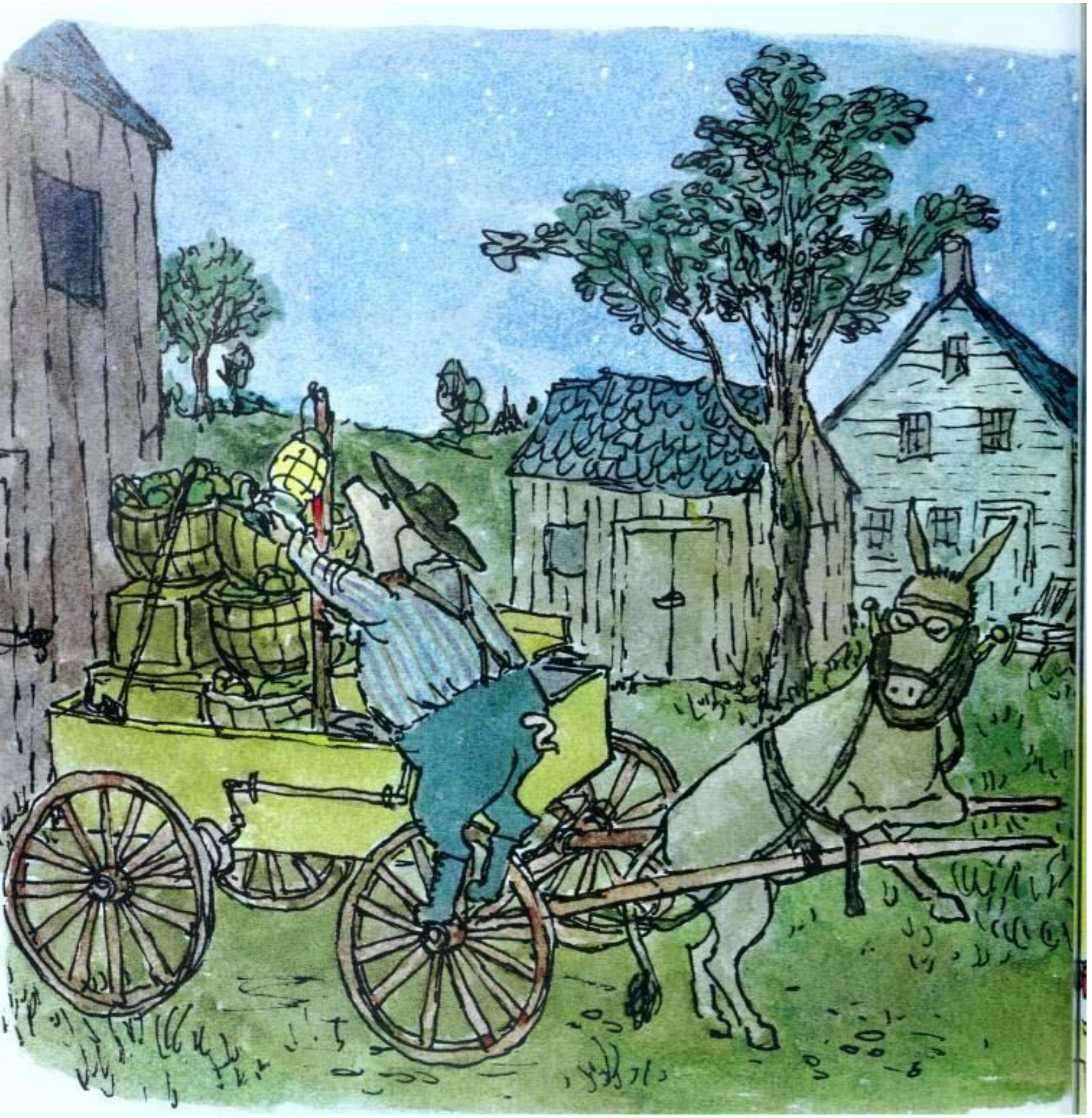

उसने लालटेन जलाई और उसे गाड़ी पर लगे खम्बे पर लटका दिया. अपनी आदतानुसार बड़बड़ाते हुए, गधे एबेनेज़र ने, गाड़ी की पट्टियाँ खुद ही बाँध लीं और गाड़ी से जुत गया. फिर पामर-किसान सीट पर उछलकर बैठा और चल पड़ा बाजार की ओर - प्याज, शलजम और लेटिस बेंचने.

लगभग आठ बजे वे शहर पहुंचे. एबेनेज़र बेचारा थके-थके, सर हिलाते हुए अपने मोटे चश्मे से जमीन घूरता रहा. दस बजे तक, सभी सब्जियां बिक गईं. पामर-किसान की जेब अब पैसों से भारी हो गयी. उसने कुछ पैसे अपने परिवार के लिए उपहार खरीदने में खर्च कर डाले. उसने अपनी सुंदर-मोटी बीबी के लिए एक कैमरा खरीदा. अपने मोटे बेटे मैक के लिए - जिसे चीजें बनाना पसंद थीं, औजारों की एक पेटी खरीदी. अपनी मोटी बेटी मारिया के लिए, एक साइकिल खरीदी, क्योंकि वह बहुत दिनों से उसकी मांग कर रही थी. और अपने मोटे बेटे जैक के लिए, जो संगीत प्रेमी था, एक हार्मोनिका. खुद के लिये उसने एक चांदी की घड़ी, और बूढ़े गधे एबेनेज़र के लिए, जिसे धूप अच्छी नहीं लगती, एक फूस की टोपी.

एबेनेज़र को कोई उपहार मिलने की उम्मीद न थी. खुशी के मारे थोड़ा शरमाते हुए उसने प्यार से पामर-किसान को छाती से लगाया और बोला, "मेरी पूंछ हिलाओ!"

प्यास बुझाने के लिए सरपारिल्ला शर्बत पीकर दोनों दोपहर को घर के लिए रवाना हुए. अगर सब कुछ ठीक-ठाक रहा, और सब ठीक क्यों नहीं होगा, तो पामर-किसान के अनुमान के अनुसार वे दोनों, तीन बजे तक खेत वापस पहुंचते.

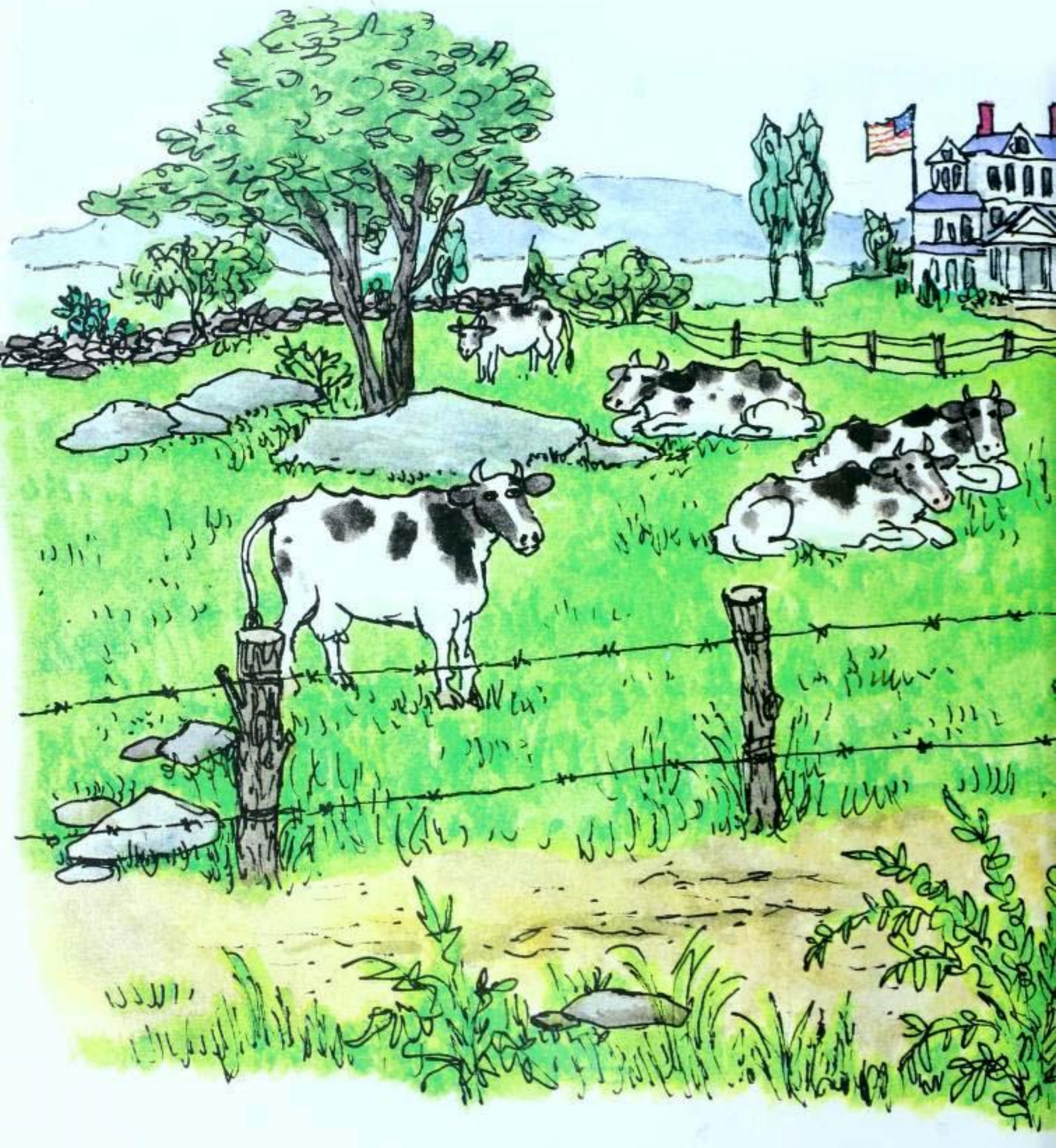

अगस्त का महीना था. सूरज चमक रहा था. धूप में गर्मी थी. वे बातें करते-करते आगे बढ़े जा रहे थे. एबेनेज़र ने कहा कि अगर बारिश हुई तो कुछ अच्छा लगेगा, और चैन मिलेगा. पामर-किसान ने उसकी हाँ-में-हाँ मिलाई.

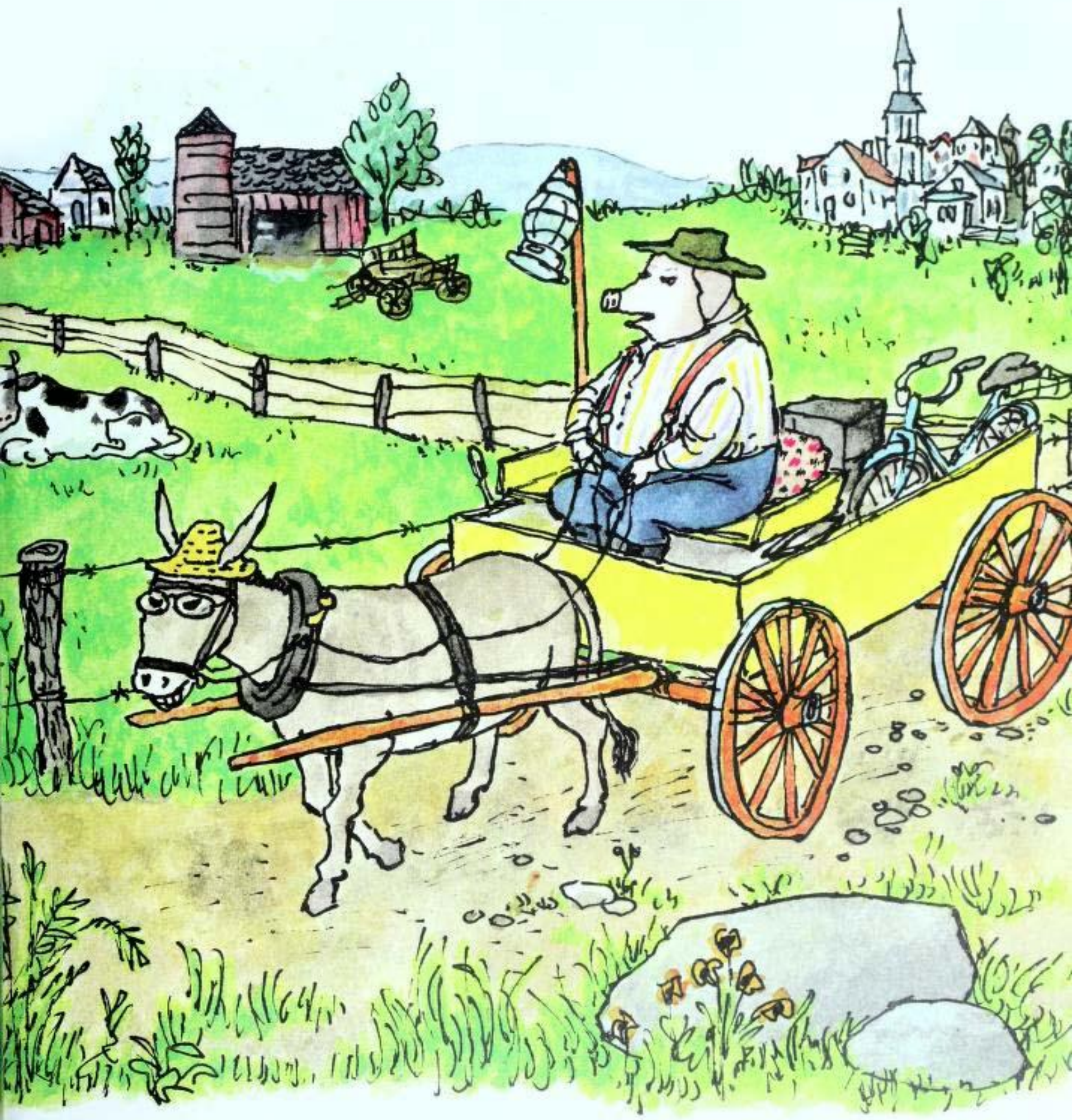

फिर दोनों चुपचाप कीड़ों की झंकार -- जिज्जिंग-जेजिंग, चिरिंग-व्हिरिंग सुनते हुए आगे बढ़ते रहे. पामर-किसान ने एक लाल कपड़े से अपने माथे को पोछा और फिर घर के बारे में सोचने लगा. वह जल्दी ही अपने प्यारे-मोटे परिवार के पास पहुँचकर उनके चेहरों पर गिफ्ट मिलने की खुशी को देखना चाहता था.

थोड़ी ही देर में ऊबड़-खाबड़ सड़क एक जंगल में से होकर गुजरी. जैसे ही गाड़ी उतार-चढ़ाव में होती हुई आगे बढ़ी, उसे काले बादलों ने घेर लिया. जोरों की हवा से पेड़ों की पत्तियाँ भी तेजी से इधर-उधर हिलने लगीं. फिर, जिस बरसात की आस लगाये बैठे थे वह भी आ गयी -- पहले धीरे-धीरे, फिर मूसलाधार.

सड़क की धूल गायब हो गई. उस पर पानी भर गया. पहले बिजली की खौफनाक गर्जना कहीं दूर सुनाई दी, फिर बहुत पास. और फिर छुरी की तरह पेड़ों के बीच से बिजली तेजी से दौड़ती हुई चमकी.

एबेनेज़र और पामर-किसान ने एक पेड़ को अपने ऊपर गिरते देखा. दोनों बहुत डर गए. दोनों में से कोई भी उस समय मरना नहीं चाहता था.

पेड़ गाड़ी की ओर तेजी से गिर रहा था. जैसे ही पेड़ गाड़ी पर गिरा, गाड़ी जोरों से हिली. इसे चमत्कार ही कहिये कि सूअर और गधे को कोई चोट नहीं लगी. दोनों शाखाओं और पत्तियों में उलझे गए और गाड़ी दलदल में धंस गई.

पामर-किसान ने एबेनेज़र को देखा और फिर ऊपर आकाश की ओर देखते हुआ बोला, "मैं अब भला कैसे अपनी प्यारी पत्नी और बच्चों के पास जा सकूंगा?" न गधे ने कोई उत्तर दिया, न ही भगवान ने. अपने प्रश्न के बारे में और ज्यादा न सोचकर, उसने गिरे पेड़ की शाखाओं के बीच टटोलकर बेटे मैक के लिये खरीदी औजारों की पेटी से आरी और कुल्हाड़ी निकाली.

"कोई भी इस पर विश्वास नहीं करेगा," एबेनेज़र ने कहा. "चलो एक फोटो खींच लेते हैं." उसने श्रीमती पामर के कैमरे को ढून्ढ निकाला, अपने सिर को काले कपड़े से ढंका, और सूअर की क्रोधमुद्रा में जोर-शोर से पेड़ काटते हुए फोटो खींच ली. फिर वे दोनों एक साथ, थुक-थुंक और वूश-शीश, वूश-शीश करते हुए आरी चलाने लगे. कुछ ही घंटों में पेड़ के टुकड़े-टुकड़े हुए और गाड़ी उसके नीचे से निकल गयी. बारिश भी बंद हो गई. सूरज फिर चमकने लगा. और मौसम फिर से गर्म हो गया.

पेड़ के वजन से गाड़ी के पहिये कीचड़ में फंस गये. एबेनेज़र को अपनी बूढ़ी-टांगों को सीधा करके जोर से गाड़ी को आगे धकेलना पड़ा. पामर-किसान यही उम्मीद लगाये था कि अब कोई देरी न हो. वैसे ही इतनी देर हो गयी थी! उसे मालूम था कि घरवाले बहुत चिंतित होंगे.

कुछ देर में गाड़ी, एक लम्बे खतरनाक ढाल पर पहुँची. बीच-रास्ते, गाड़ी को तेजी से झटका लगा. एक पहिए का नट जो उसे एक्सेल से जोड़े हुए था ढीला पड़कर निकल गया. और उसके साथ ही पहिये ने गाड़ी को अलविदा कहा और तेजी से पहाड़ी पर नीचे मस्ती में लुढ़कने लगा. पामर-किसान अपनी सीट से कूदा और पहिये के पीछे भागा. "भैया रुक जाओ!" वह चिल्लाया. "कृपया रुको, वरना मैं कभी भी घर नहीं पहुँच पाउँगा. मेरी पत्नी और बच्चे इंतजार कर रहे होंगे!" पहिये को पामर की दुर्दशा में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई. वह उछलता, कूदता, तेजी से भागा जा रहा था और बेचारा हताश सूअर उसके पीछे-पीछे, आंसू बहाता हुआ दौड़ रहा था.

पामर-किसान ने अपने बेटे जैक के लिये खरीदे हार्मोनिका को अपनी जेब में उछलते हुए महसूस किया. उसने उसे बाहर निकाला और हांफते हुए एक छोटी धुन बजाई:

रिथ-मू, ज़ी-ज़ू,
ज़ी-ज़्वी
ज़्वाडल ब्राडल डू

पहिये को धुन अच्छी लगी. वह थोड़ा डगमगाया और फिर लुढ़ककर एक जगह धुन सुनने के लिये चित्त लेट गया.
पामर-किसान ने जल्दी से उसे उसकी कमानियों से पकड़ा, उसे झिंझोड़ा और डांटा भी. फिर उसे घसीटते हुए पहाड़ी पर लाया और एक्सल पर उसे नट से टाइट कर दिया. एबेनेज़र बड़बड़ा रहा था -- पहियों के अपने ही दिमाग होते हैं! अब तक चार बज चुके थे.

"एबेनेज़र, क्या तुम थोड़ा तेज़ चल सकते हो?"

"मैं बहुत थक गया हूँ."
पामर-किसान बोला, "मुझे पता है."
"मुझ पर एक-दो चाबुक चलाओ," एबेनेज़र ने सुझाव दिया.
"न बहुत हल्के से, न बहुत जोर से."

पामर-किसान ने हवा में चाबुक लहराया और एबेनेज़र के ऊपर धीरे से मारा. "फटाफट चलो!" वह बोला
एबेनेज़र सूखी सड़क पर तेजी से दौड़ने लगा.

कुछ आगे, एबेनेज़र को अपनी धुंधली आँखों से सड़क पर एक कछुआ दिखाई दिया. उसे बचाने के चक्कर में उसका खुर एक खड्डे में जा पड़ा. थोड़ी देर तो वो लंगड़ाया, फिर सड़क पर लेटकर दर्द से पीड़ित होकर इतनी तेज़ कराहा कि शांत वादियां भी मचल उठी.

"क्या हुआ?" पामर-किसान ने गाड़ी से उतरते हुए पूछा.
"लगता है टांग में मोच आ गई है," एबेनेज़र रोता हुआ बोला.
"पीछे की बाईं टांग में." और वो फिर दुबारा, दर्द से कराहा.

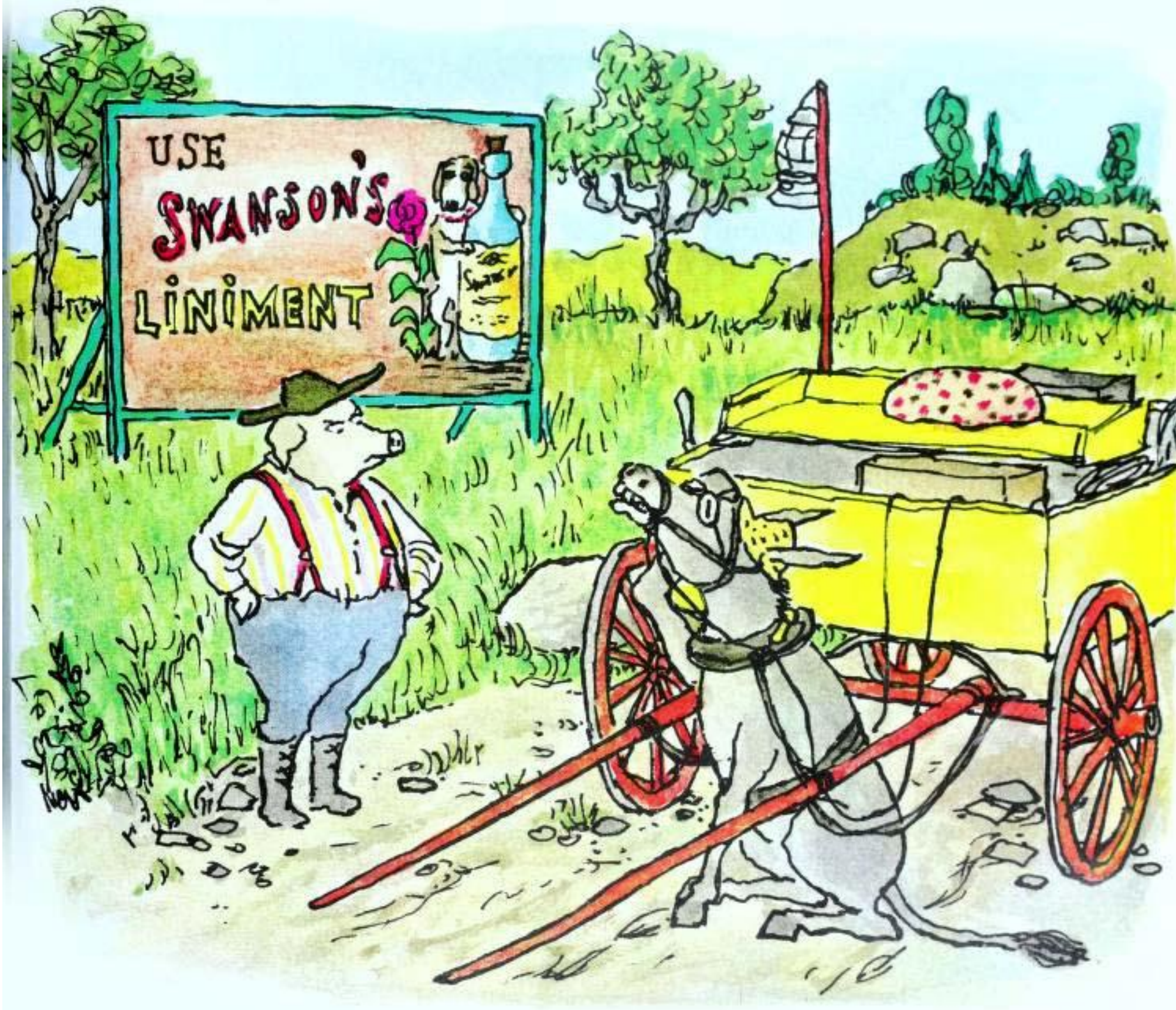

"क्या कराहने से सचमुच कोई फायदा होगा?" सूअर ने बेसब्री से पूछा. "क्या तुम्हें यकीन है यह मोच है? खड़े होने की कोशिश करो." एबेनेज़र ने कोशिश की. "दर्द की वजह से मैं खड़ा नहीं हो सकता."

गधा, फिर से कराहा, पर इस बार उसकी आवाज में असंतोष था. "अब पता नहीं कैसे आप अपनी बेचारी चिंतित पत्नी और बच्चों के पास घर पहुंचेंगे. ओह, मैं भी कैसा अजीब गधा हूं! मुझे शर्म आ रही है अपने ऑप पर."

"बकवास!" पामर-किसान जोर से बोला. उसने एबेनेज़र की रस्सियां हटाईं और किसी तरह उसे गाड़ी में चढ़ाया.

गधा गाड़ी में लेटा पामर-किसान को घूरता रहा जो अपने मोटे पेट पर पेटियां बाँधकर अब गाड़ी में जुत चुका था.
बोझा ढोने के जानवर के रूप में सूअर की तस्वीर खींचते हुए, एबेनेज़र चिल्लाया, "चमगादड़ और बारनेकल!"

पामर-किसान ने गाड़ी जोर से खींची. गाड़ी चल पड़ी. जल्द ही वह सफर तय करने लगा. एबेनेज़र को यह सब अजीब लग रहा था. उसे अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हो रहा था. उसे यात्री बनने में मज़ा तो आ ही रहा था. वह सोच रहा था कि उन्हें भविष्य में ऐसे ही बदल-बदल कर गाड़ी चलानी चाहिये.

एबेनेज़र के बैठने से गाड़ी बहुत भारी हो गयी थी. थोड़ी ही देर बाद सूअर को अपनी स्पीड कम करनी पड़ी. फिर पहियों की चरचराती, चीं-चीं करती आवाज़ के साथ यात्रा ज़ारी रही.

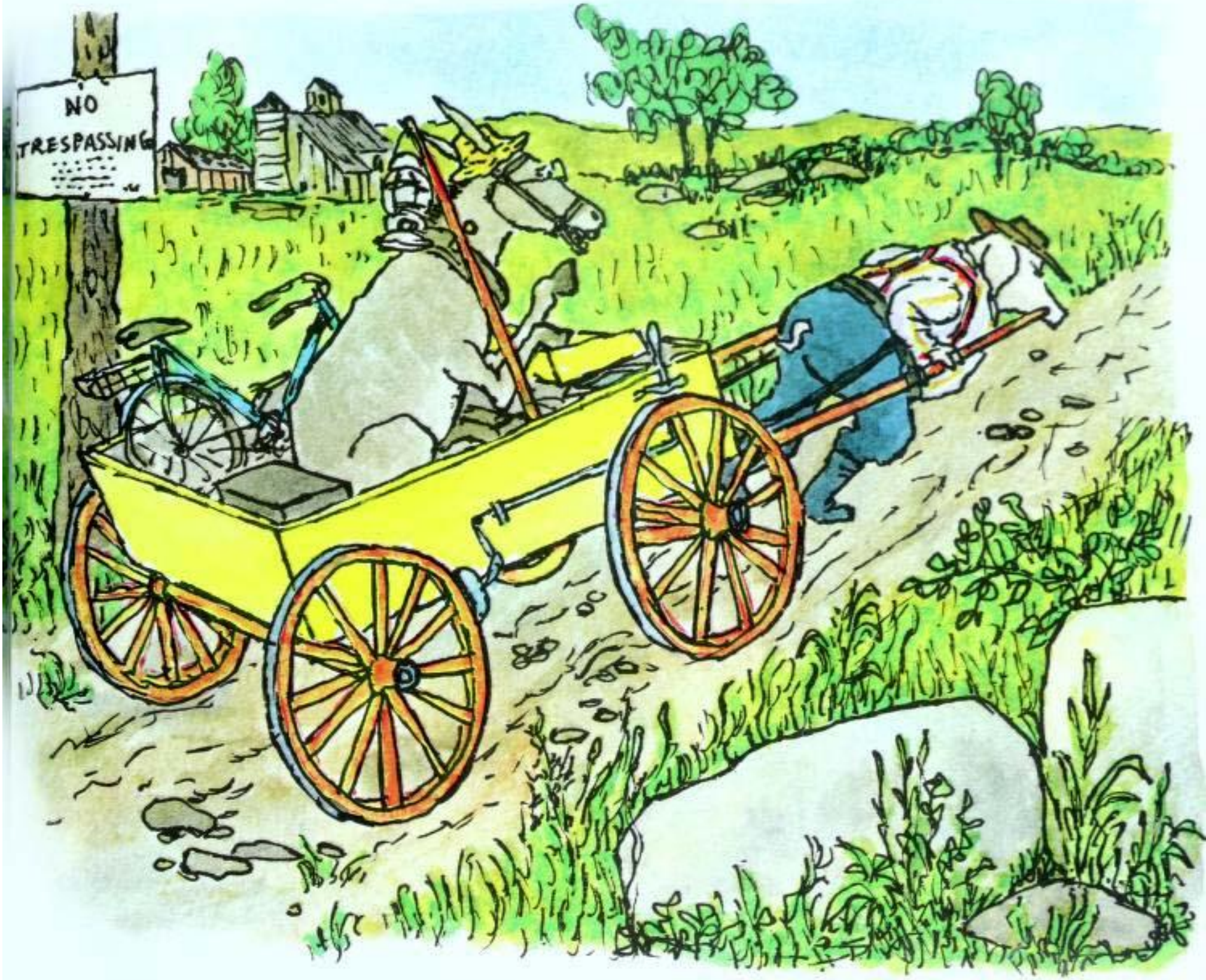

वे हॉथोर्न-हिल लगभग छह बजे पहुंचे. पामर-किसान अपनी थकी टांगों से झुंझलाता, कोसता, शोर मचाता किसी तरह गाड़ी को एक कठिन चढ़ाई पर चढ़ाता हुआ चला. लेटे हुये एबेनेज़र को दया आयी. "शाबाश पामर," उसने कहा, "तुमने तो कमाल ही कर दिया." प्रोत्साहित करने वाले इन शब्दों से सूअर को मदद मिली. उन शब्दों ने पामर-किसान को पागल कर दिया. इस पागलपन से उसमें इतनी ताकत आ गई कि वो गाड़ी को पहाड़ी की चोटी तक चढ़ा लाया.

वहां उसने एक क्षण विश्राम किया और आगे के ढलान को राहत के साथ देखा. उसने सोचा अब तो गाड़ी अपने वजन से खुद ही नीचे उतरेगी और उसे कुछ ज्यादा नहीं करना पड़ेगा.

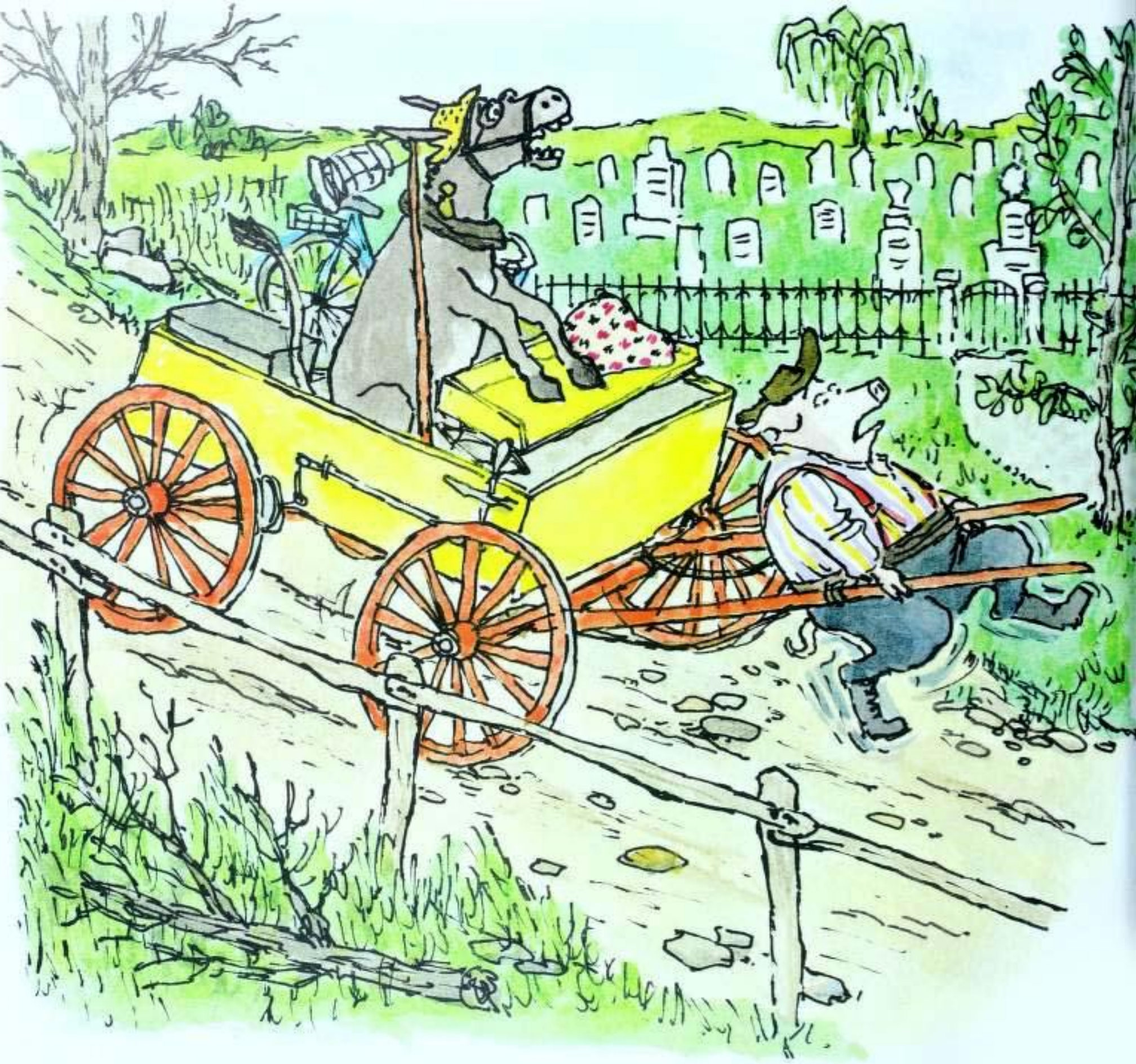

शुरूआत हुई एक छलांग के साथ. फिर अचानक सब बहुत तेजी से होने लगा. गाड़ी, सूअर को दौड़ा रही थी और उसकी टांगें उलट-पलट कर पड़ रहीं थीं. वह गाड़ी के बांसों के सहारे हवा में झूलने लगा और उसकी टांगे गोल-गोल चक्कर काटने लगीं. उसे पूरा यकीन था कि यह उसकी जिंदगी का अखिरी दिन था - उसका अतीत उसके सामने से गुजरने लगा. एबेनेज़र ने भगवान के प्रति अपनी निराशा तो व्यक्त की पर गाड़ी के ब्रेक लगाने में थोड़ी देर की.

पहिये जैसे ही खड्डों और पत्थरों पर से लुढ़के, एक अजीब सी रिबड़-डिबड़, रिबड़-डिबड़ की आवाज हुई और वे गाड़ी से निकल कर अलग-अलग दिशाओं में भाग लिये. एबेनेज़र ने गाड़ी के पीछे की ओर कलाबाजी लगाई. और पामर-किसान गाड़ी के नीचे की जमीन चाटने लगा.

अब गधा, सूअर, और जो कभी गाड़ी होती थी, उसके अंजर-पंजर पहाड़ी के किनारे छितर-बितर पड़े थे.
"तुम ठीक हो?" पामर-किसान ने पूछा. "यह जानने के लिए कि मैं कितना ठीक हूँ, मुझे बहुत समय लगेगा," एबेनेज़र ने कहा. "तुम्हारा कैसा हाल है?"
"सब कुछ दुःख रहा है," पामर-किसान ने कहा, "लेकिन गाड़ी के अलावा और कुछ नहीं टूटा है." उन्होंने एक-दूसरे को देखा और सिर हिलाया.
"गाड़ी तो अब ठीक नहीं की जा सकती," सूअर ने कहा. "दुनिया का सबसे बड़ा मैकेनिक भी अब उसे ठीक नहीं कर सकता," एबेनेज़र बोला.

"अब हम क्या करें?" पामर-किसान ने दर्द भरी आवाज में कहा.
एबेनेज़र ने कहा, "लगता है अब तो तुम्हें ही मुझे ढोना पड़ेगा."

"एक मिनट रुको!" उसे याद आयी साइकिल की, जो डेज़ी फूलों की क्यारी में पड़ी थी.

"मज़ा आ गया!" पामर-किसान ने कहा "बस, अब काम बन गया!" वह साइकिल पर सवार हुआ और उसने उसे कुछ दूर चलाकर देखा. "अपना काम चल जायगा!" उसने ऐलान किया. "चलो, जल्दी करो!"

उसने गाड़ी की पेटियों से औजार वाले संदूक को साइकिल के कैरियर से बाँधा और कैमरे और उसके स्टैंड को एबेनेज़र की पीठ से.
फिर पामर-किसान साइकिल पर बैठा और एबेनेज़र के बैठने का इंतजार करने लगे. एबेनेज़र, पामर-किसान के पीछे गले से लिपटते हुए अपने खुरों को साइकिल के हैंडिल पर रखकर सुरक्षित बैठ गया.

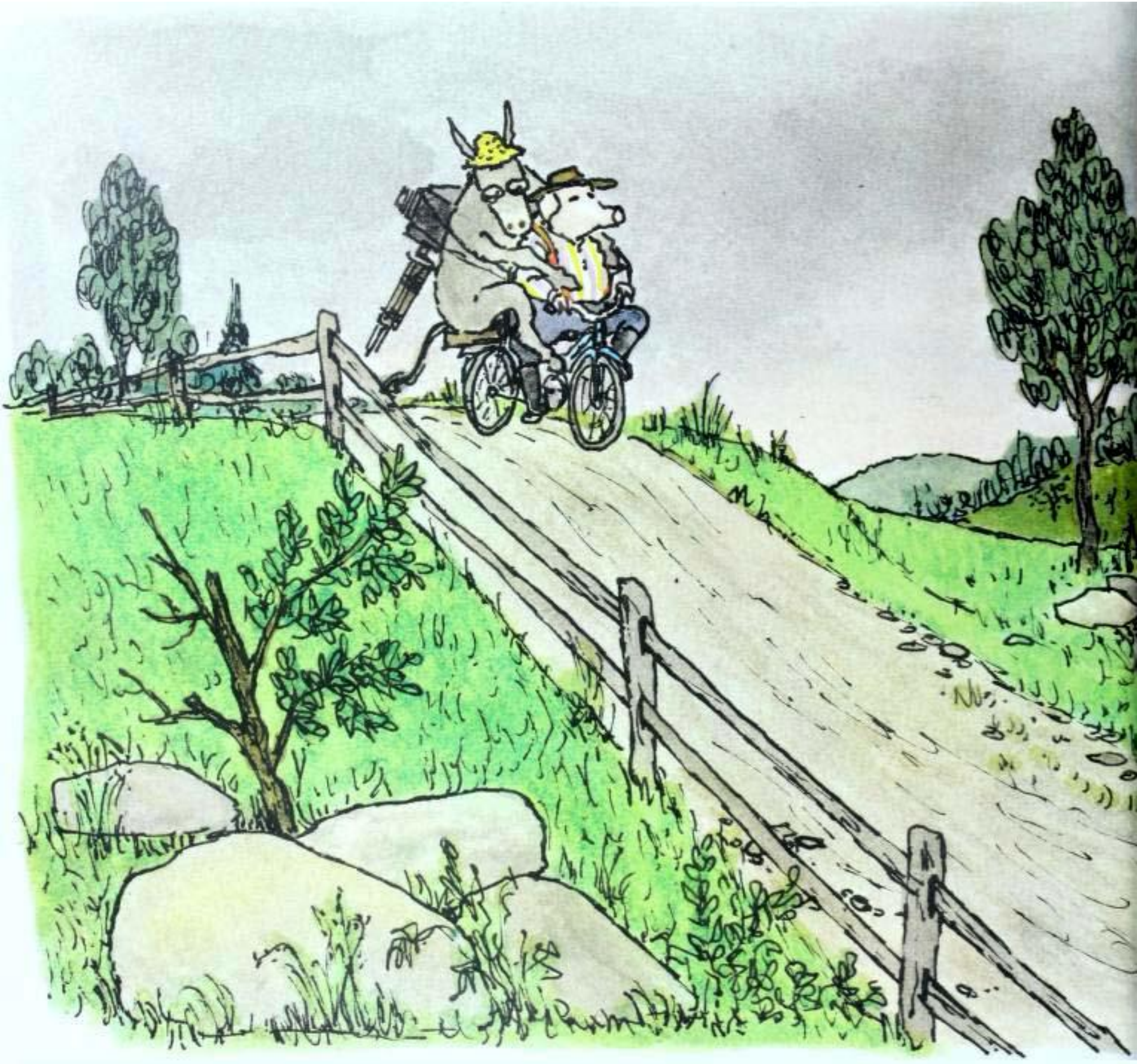

वे दोनों बहुत थके हुए थे. पामर-किसान थकी टांगों से काँपते हुए पैडल मार रहा था. दोनों सड़क पर आड़े-टेढ़े चले जा रहे थे. एबेनेज़र जल्द ही सूअर के कंधे पर सो गया, और खर्राटे भरने लगा. पामर-किसान ने सोचा "काश, में भी हरी-घास पर लेटकर अपने दोस्त एबेनेज़र की तरह सो सकता," लेकिन फिर उसे याद आये अपने बच्चों के प्यारे चेहरे और अपनी पत्नी की छोटी-छोटी सुन्दर आँखें.

बच्चों और पत्नी के प्रेम ने उसे चलते रहने की ताकत दी. परन्तु ज्यों-ज्यों सूरज डूबने लगा, थकान के कारण साइकिल उतनी ही ज्यादा टेढ़ी-मेढ़ी चलने लगी.

अब तक दिन छिप चुका था. गेट के पास इंतजार करते बच्चों ने पहाड़ी पर एक मोटी शक्ल और उसके पीछे बैठी हुई और भी मोटी शक्ल को पहियों पर आते देखा. वे तुरंत पहचान गये कि कौन आ रहा था. वे अपने प्रश्नों के साथ उनसे गले लिपटने और उन्हें चूमने तेजी से दौड़े.

श्रीमती पामर, जो कि रसोई से सबकुछ देख रहीं थीं, तेजी से बाकी सबके साथ हंसते, चुंबन करते और आंखों को एप्रन से पोंछते हुए शामिल हुईं. उनका पति हँस भी रहा था और खुशी से रो भी रहा था. बूढ़ा एबेनेज़र भी अपनी खुशी जताने के लिये जोर से हिनहिनाया. सबको इस बात की खुशी थी कि यात्री सुरक्षित घर वापस घर लौटे थे.

थोड़ी देर बाद वे सब बातें करते हुए दावत खाने बैठे. लेकिन बेचारे एबेनेज़र ने खाना बिस्तर पर ही खाया क्योंकि उनकी मोच वाली टांग पर एक पुल्टिस जो बंधी थी!